द्विभाषी राष्ट्रसेवक

ISSN 2321-4945
UGC CARE Listed Journal

• वर्ष : 73 • अंक : 6/7 • सितंबर, अक्टूबर/2023

RNI NO. ASSBIL/2009/31008

ISSN : 2321-4945

एक हृदय हो भारत जननी

द्विभाषी राष्ट्रसेवक

(भाषा, साहित्य, समाज, कला व संस्कृति विषयक शोध-पत्रिका)

UGC CARE Listed Journal

वर्ष : 73 अंक : 6/7 सितंबर/अक्टूबर, 2023

परामर्श मंडल

श्री भारतभूषण महंत
कार्याध्यक्ष, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति
गुवाहाटी (असम)

प्रो. आर.एस. सर्राजु
सम कुलपति, हैदराबाद विश्वविद्यालय
तेलंगाना-500046

प्रो. प्रदीप के शर्मा
प्रोफेसर, हिंदी विभाग
सिक्किम केंद्रीय विश्वविद्यालय
काजी रोड, गंगटोक, सिक्किम - 737101

डॉ. दीपक प्रकाश त्यागी
प्रोफेसर, हिंदी विभाग
दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)

डॉ. दिलीप कुमार मेधि
प्रोफेसर, हिंदी विभाग
गौहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी (असम)

डॉ. अमूल्य चंद्र बर्मन
पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग
कॉटन विश्वविद्यालय, गुवाहाटी (असम)

डॉ. अच्युत शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग
गौहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी (असम)

प्रधान संपादक

डॉ. क्षीरदा कुमार शइकीया
मंत्री, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

संपादक

प्रो. मोहन
पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली-110007

कार्यकारी संपादक

रामनाथ प्रसाद
प्रभारी साहित्य सचिव
असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी

विषय सूची

हिंदी विभाग

संपादकीय 4

1. पूर्वोत्तर में हिंदी के बढ़ते कदम — ✍ डॉ. अच्युत शर्मा 6
2. हिंदी का भविष्य : चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ — ✍ डॉ. कंचन शर्मा 10
3. साहित्य में मानव अधिकार की अभिव्यक्ति — ✍ डॉ. अरुण कुमार पाण्डेय 15
4. विभाजन की त्रासदी का इस्पाती सत्य : तमस — ✍ डॉ. सपना सैनी 21
5. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में मारवाड़ के जैन स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान — ✍ डॉ. रवीन्द्र सिंह राठौड़ 27
6. संस्कृति और राष्ट्र अंतर्संबंध — ✍ डॉ. आशीष 32
7. हिंदी उपन्यासों में किन्नर जीवन का मनोविज्ञान — ✍ दिवेश कुमार चंद्रा 36
8. जीवन मूल्य के धनी कवि रमाशंकर यादव 'विद्रोही' — ✍ प्रो. सुशील कुमार शर्मा, ✍ आलिया जेसमिना 40
9. स्त्री प्रश्न और प्रसाद के नाटक — ✍ डॉ. ऐश्वर्य झा 47
10. वांचो समुदाय की परंपराएँ और जमुना बीनी की कहानियाँ — ✍ धनंजय मल्लिक 54
11. मोहनदास की प्रथम लंदन यात्रा : चुनौतियाँ एवं सामाधान — ✍ समीर देव 62

অসমীয়া বিভাগ

12. চাৰিত্ৰিক বিকাশত ভৰ্তৃহৰিৰ আৱদান — ✍ ড° নিলাক্ষী মিলি মেদক 69
13. পদ্মৰাম শালৈৰ 'শালৈ জাতিৰ ঐতিহ্য বিচাৰ'ৰ এক বিশ্লেষণাত্মক অধ্যয়ন — ✍ ভনিতা বৈশ্য, ✍ ড° জ্যোৎস্না ৰাউত 76
14. প্ৰাক্-স্বাধীনতা কালৰ অসম সাহিত্য সভাৰ সভাপতিসকলৰ অভিভাষণত বিশ্বসাহিত্য প্ৰসঙ্গ ঃ এটি অধ্যয়ন — ✍ জুমি বৰ্মন 84
15. ভূপেন হাজৰিকাৰ গীতত শব্দৰ সমাহাৰ — ✍ মৰমী চৌধুৰী 90
16. অসমৰ টেটোন শ্ৰেণীৰ সাধুকথা ঃ নিংনি ভাৰৰীয়াৰ সাধুকথাৰ বিশেষ উল্লিখনসহ — ✍ ব্ৰজেন বৈশ্য, ✍ ড° উপেন ৰাভা হাকাচাম 96
17. মামণি ৰয়ছম গোস্বামীৰ উপন্যাসত আৰ্থ-সামাজিক দিশ ঃ এক অধ্যয়ন — ✍ তৰালী সূত্ৰধৰ 105

ISSN 2321-4945
UGC CARE Listed Journal
RNI NO. ASSBIL/2009/31008

आलेख

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में मारवाड़ के जैन स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान

डॉ. रवीन्द्र सिंह राठौड़

सहायक आचार्य
अहिंसा व शांति विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूं (राजस्थान)
मो. 9829740007
ravindrachhapara@gmail.com

भारत को स्वतंत्र करवाने के लिए देश के विविध स्थानों पर प्रयास होते रहे, किंतु 1857 में एक संगठित क्रांति हुई, जिसके परिणामस्वरूप संपूर्ण देश भर में क्रांति की अलख जाग उठी, जिसकी अगुवा झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई बनीं। महारानी लक्ष्मी बाई को तो आज सभी जानते हैं, किंतु आर्थिक संघर्ष से जूझ रहीं लक्ष्मीबाई को खजाना खोलकर सहायता करने वाले ग्वालियर नरेश के खजांची अमर शहीद अमर चंद बांठिया को शायद ही कोई जानता हो। इतिहास के पन्ने गवाह हैं कि किस प्रकार फाँसी देने के बाद तीन दिन तक उनका शव ग्वालियर के सर्राफा बाजार के नीम के पेड़ पर लटकाए रखा गया था। इस दौरान सर्वधर्म के क्रांतिकारियों का योगदान रहा। इसमें जैन समाज का योगदान भी उल्लेखनीय रहा है। बहादुर शाह जफर ने लाला हुकमचंद जैन हांसी व उनके भतीजे फकीर चंद जैन को उन्हीं की कोठी के आगे फाँसी पर लटका दिया गया था। जैन धर्म हमेशा अहिंसा व शांति का पक्षधर रहा है। किंतु राष्ट्र के सम्मान के लिए जब-जब भी जरूरत हुई, तब-तब शौर्य व वीरता के साथ अपनी भूमिका निभाई।

मूल आलेख : 1857 की क्रांति भारत के लिए आजादी और स्वतंत्रता संग्राम के बिगुल के समान थी। इसके बाद अंग्रेजों ने दिल्ली पर पुन: अधिकार कर लिया। इस स्वतंत्रता संग्राम में जो भी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी रहे उन्हें फाँसी पर चढ़ा दिया गया। बेगम हजरत महल और नाना साहब भूमिगत हो गए। झाँसी की रानी वीरगति को प्राप्त हो गईं और तात्या टोपे को भी फाँसी पर लटका दिया गया। धीरे-धीरे एकता, संगठन, नीति और दृढ़ता के बल पर अंग्रेजों ने इस प्रथम स्वतंत्रता संग्राम को दबा दिया। इस संग्राम ने जहाँ भारत में नवजागरण युग का सूत्रपात हुआ और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की ऐसी सुदृढ़ नींव रखी। वहीं दूसरी और अंग्रेजी सरकार ने भी उग्र भारतीय मानसिकता को पहचाना और कानून पास कर भारत का शासन अपने हाथ में ले लिया। अब गवर्नर जनरल के

स्थान पर वायसराय के पद की घोषणा की गई।

To
The
ThePatentOffice.AtDelhi

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में राजस्थान के जैन स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान भी अपूर्व रहा, जिसमें मुख्य रूप से जयपुर के क्रांतिकारी अर्जुन लाल सेठी का योगदान भी अद्‌भुत रहा, उन्होंने जयपुर राज्य की नौकरी छोड़ कर स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। अर्जुन लाल सेठी ने आंदोलन की रूपरेखा के लिए मोती चंद और देव-वेद सांगली को जयपुर बुलाया। उनका कार्य था देश में स्वाधीनता युद्ध के लिए सैनिकों की भर्ती करना। उन्होंने भारत माँ को स्वतंत्र कराने का बीड़ा उठाया और क्रांतिकारी दल में सम्मिलित होने का निश्चय किया। उस समय क्रांतिकारी दल का काम अर्थाभाव के कारण ठप हो गया। अतः इन युवकों ने किसी देशद्रोही धनिक को मारकर धन लूटने की योजना बनाई। लेकिन इस कार्य में भी सफलता नहीं मिली। इस कारण क्रांतिकारी विद्यालय चलने में दिक्कत आने लगी और कुछ समय पश्चात अर्जुन लाल सेठी, मोतीचंद सेठी, विष्णुदत्त शर्मा, माणिकचंद को गिरफ्तार कर लिया गया, जिसमें अर्जुन लाल सेठी को सबूतों के अभाव में जेल में डाल दिया और मोतीचंद सेठी, विष्णुदत्त शर्मा को 1915 में फाँसी पर चढ़ा दिया।

इन स्वतंत्रता सैनानियों के क्रम में ही अन्य राजस्थान के मारवाड़ और आस-पास के स्वतंत्रता सेनानियों को भी नहीं भुलाया जा सकता, जिन्होंने आजादी के लिए अनेक कष्ट सहे, जिनका विवरण निम्न प्रकार से है-

1. अभयमल जैन : अभयमल जैन मारवाड़ लोक परिषद के संस्थापकों में से एक थे। इनका जन्म जोधपुर में हुआ। 1932 के राजनैतिक सम्मेलन में जयनारायण व्यास ने बुलाया और इन पर 1932 में राजद्रोही कार्यों में भाग लेने के कारण इनको रेलवे की नौकरी से निकाल दिया गया। तब अपनी स्टेशनरी की दुकान से गतिविधियाँ शुरू कर दीं। 1936 में छात्रों की शुल्क वृद्धि और बाईजी तालाब के मसले को लेकर आंदोलन किया। सरकार द्वारा गिरफ्तार कर एक वर्ष परबतसर के किले में रखा गया। 1942 में अभयमल जैन को 2 वर्ष की जेल हुई और आजादी के एक माह पूर्व जुलाई, 1947 में आपकी मृत्यु हो गई। आजादी का भावी जश्न देशवासियों के लिए छोड़ गए।

2. उगम राज मोहनोत : उगम राज मोहनोत का जन्म 25 जुलाई, 1925 में जोधपुर में हुआ। 1940 में लोक परिषद के आंदोलन में आपने वानर सेना के स्वयंसेवक के रूप में कार्य किया और 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान भारत सुरक्षा कानून के अंतर्गत डेढ़ वर्ष की सजा हुई, तब मात्र आप दसवीं के छात्र थे। तलाशी के दौरान पुलिस घर का सामान ले गई और उन पर स्कूल में प्रवेश लेने पर प्रतिबंध लगा दिया।

3. किशनलाल शाह : किशनलाल शाह ने विद्यार्थी जीवन से ही आंदोलनों में भाग लिया। सामंत शाही और जागीरदारी प्रथा को समाप्त करने के लिए किसान आंदोलन संगठित किया। 14 मार्च, 1947 में डाबड़ा हत्याकांड में सामंती तत्वों ने आपको गंभीर रूप से घयल कर दिया। आपको ही अभियुक्त बनाकर खून और हत्या के अभियोग में गिरफ्तार कर मुकदमा चलाया गया।

4. चम्पालाल फूलफगर : चम्पालाल फुलफगर का जन्म 1905 को लाडनूं में हुआ। लाडनूं में निर्वाचित नगर परिषद की स्थापना का कार्य किया। मारवाड़ लोक परिषद के सदस्य बने और आंदोलन में भाग लेने लगे। 1942 में मृत्यु हो गई और उनके नाम से चम्पालाल फूलफगर मार्ग रखा गया।

5. जीवनलाल कोठारी : जीवनलाल कोठारी हाई स्कूल के अध्यापक थे। 1938 में खादी पहनने के कारण राजशाही इनसे नाराज हो गए और नौकरी से हटा कर किसी झूठे मुकदमे में फँसाकर जेल में डाल दिया। कोठारी जी ने एक वर्ष की जेल यात्रा जैसलमेर जेल में भोगी।

6. डालमचंद डोसी : डालमचंद डोसी का जन्म 1912 कुशलगढ़ में हुआ। डोसी ने दोहद (गुजरात) में जिलाधीश भवन की तीसरी मंजिल पर चढ़कर तिरंगा झंडा फहराया। 1942 में भारत छोडो आंदोलन में दोहद के आस-पास गाँवों में घूमकर 'करो या मरो' का प्रचार करने लगे। उन्हें गिरफ्तार कर छह माह की सजा तथा एक सौ रुपए अर्थदंड लगाया गया। अर्थदंड नहीं देने पर दो माह की सजा और भुगतनी पड़ी। इन दिनों साबरमती जेल में

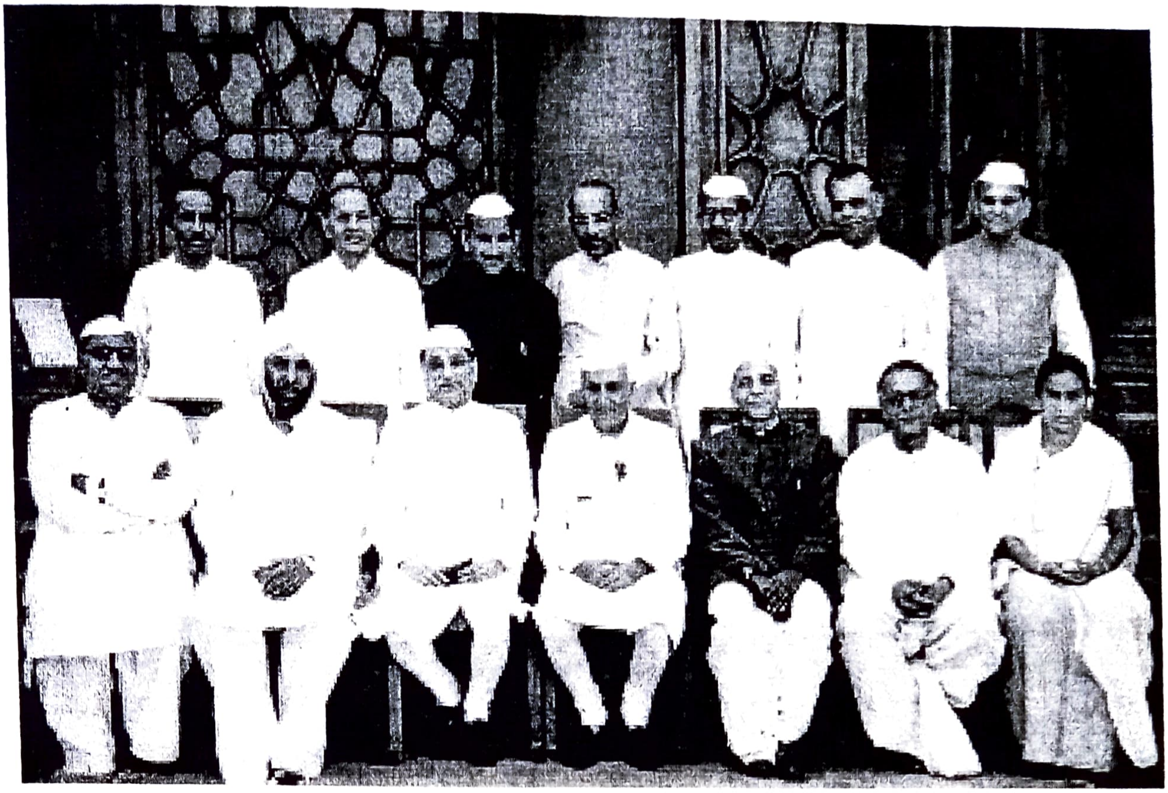

रहे। 1944 में प्रजामंडल की स्थापना कर नागरिक अधिकार सुविधाओं को देने के लिए आंदोलन किया। 1946 में हरिजन उद्धार और अस्पृश्यता निवारण में भी उन्होंने महती भूमिका निभाई। कुशलगढ़ में गांधी आश्रम और खादी केंद्र की स्थापना की। डोसी के क्रांति कार्यों को देखते हुए मारवाड़ के क्रांतिकारियों में भी जोश जाग उठा, जिससे कई क्रांतिकारी उनके साथ जुड़ गए।

7. डालिमचंद सेठिया : डालिमचंद सेठिया सुजानगढ़ के थे। सेठिया का राजस्थान के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों में अग्रगण्य स्थान रहा है। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में राष्ट्रनायक श्री जयप्रकाश नारायण और श्री राममनोहर लोहिया ने फरार होकर आपके निवास पर ही शरण ली थी। फलतः आपको ब्रिटिश शासन में 54 दिन का कारावास भोगना पड़ा। आप कलकत्ता में मारवाड़ी छात्रसंघ के सभापति रहे।

8. देवराज सिंघी : देवराज सिंधी का जन्म 1922 जोधपुर में हुआ। बचपन से ही क्रांति का विचार आपके मानस को आंदोलित करने लगा। 1942 में 'भारत छोड़ो आंदोलन' के समय जोधपुर में बम बनाने का काम आपने किया और उस बम को सिनेमा घर में रखा, जिसमें अंग्रेजी वायुसेना फिल्म देखने वाली थी। आपके बड़े भाई लालचन्द के हाथों से उसे सिनेमा घर में टाइम बम थैले में रखवा दिया, जिससे विस्फोट हुआ। लेकिन कोई आहत नहीं हुआ, किंतु सरकार दहल गई। दोनों भाई पकड़े गए। लालचन्द अदालत से भाग गए और साधु बनकर रहे। देवराज को 10 वर्ष की सजा हुई।

9. नेमीचंद आंचलिया : नेमीचंद आंचलिया का जन्म बीकानेर रियासत के सरदारशहर में हुआ। आंचलिया निर्भीकता के साथ बीकानेर महाराजा की निरंकुशता और शासनाधिकारी की आलोचना करते थे। 1942 की क्रांति के समय अजमेर से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक राजस्थान में बीकानेर शासन की अंधेरगर्दी को बेनकाब करने वाला एक लेख प्रकाशित किया। बीकानेर के महाराजा ने उस राजद्रोहात्मक लेख के लिए अपराधी ठहराते हुए 7 वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई। सरदारशहर और बीकानेर में आतंक पैदा करने के लिए हथकड़ी लगाकर घुमाया और कालकोठरी में डाल दिया, लेकिन 1943 में महाराजा गंगा सिंह के निधन के बाद

महाराजा सार्दुल सिंह के गद्दी पर बैठते ही राजनीतिक बंदियों की रिहाई शुरू की, लेकिन नेमीचंद की नहीं। तब उन्होंने भूख हड़ताल की और प्रजा परिषद के प्रयासों के कारण रिहा हो गए।

10. पुखराज उर्फपुष्पेन्द्र कुमार : पुखराज उर्फपुष्पेन्द्र कुमार का जन्म बिलाड़ा, जोधपुर में 1912 में हुआ। 1930 में जब छात्र थे तभी राजनीति और आंदोलन में सक्रिय हो गए। 1932 में बंबई में विदेशी कपड़ों का बहिष्कार करने के कारण बंबई में पकड़े गए और 6 माह 18 दिन की जेल हुई। 1938 में बिलाड़ा में लोक परिषद की स्थापना की। 1942 में भी आपको 4 माह 18 दिन की जेल हुई।

11. फूलचन्द बाफना : फूलचन्द बाफना का जन्म 1915 पाली में हुआ। 1942 में जब परिषद ने जिम्मेवार हुकूमत आंदोलन चलाया, तब आपकी सक्रिय गतिविधियों के कारण गिरफ्तार कर दो वर्ष की सजा दी।

12. भंवर लाल सिंघी : भंवर लाल सिंघी का जन्म 1914 जोधपुर के निकट बडू गाँव में हुआ। हाई स्कूल की परीक्षा में जयपुर में आपने सर्वोच्य अंक प्राप्त किया। लेकिन जब आपके पिताजी को 'अमानत में खयामत' के मुकदमे में गिरफ्तार होने की नौबत आई तो माँ के गहने बेच कर भरपाई की। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा की बैठक में आप महात्मा गांधी से मिले, तब इन्होंने 'करो या मरो' और 'भारत छोड़ो आंदोलन' में 1942 में शामिल हो गए। इन्होंने नागपुर और बंबई के बीच रेल लाईन व ट्रेनों को डायनामाईट से उड़ाने की योजना बनाई। लेकिन अंग्रेजों को इसकी भनक लग गई। तब उन्हें गिरफ्तार कर लिया और जेल में डाल दिया। इनकी तबीयत ठीक नहीं रहने के कारण 1945 में रिहा कर दिया गया। वे अंतिम समय तक संघर्ष करते रहे। इसका उदाहरण जब 1946-47 में बंगाल में सांप्रदायिक दंगे भड़क उठे, तब सिंघी जी मुसलमानों की सुरक्षा-व्यवस्था में अहम भूमिका निभाई और सामाजिक सुधारों में लग गए। आजादी के बाद भी आपने 1950 में पाकिस्तान में फँसे हजारों हिंदुओं को पश्चिम बंगाल लाए।

13. मांगीलाल सदासुख पाटनी : मांगीलाल सदासुख पाटनी का जन्म 1906 कुचामन में हुआ। 1930 में विदेशी कपड़ों की होली जलाने के आंदोलन से स्वतंत्रता संग्राम में कदम रखा। 1940 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में भी सक्रिय रहे। 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में 14 माह की जेल यात्रा की। नवभारत इंदौर में आपकी गिफ्तारी प्रजा मंडल के नेता के रूप में हुआ।

14. मानमल जैन : मानमल जैन का जन्म 1912 लाडनूं राजस्थान में हुआ। इन्होंने राजनैतिक प्रवृत्तियों को अपनाते हुए लोक परिषद द्वारा जागीरदारी प्रथा को समाप्त के लिए आंदोलन किया। 1942 के आंदोलन में वे जिम्मेदार हुकूमत आंदोलन में लाडनूं के सत्याग्रहियों का जत्था लेकर जोधपुर गए। तब वे गिरफ्तार कर लिए गए और सवा साल की जेल हुई। 1943 में वे रिहा हुए।

15. सेठ मोती लाल जैन : सेठ मोती लाल जैन का जन्म 1908 जोधपुर में हुआ। सेठ मोती लाल जैन ने राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन में तनमन धन समर्पित देश की आजादी में योगदान दिया। 1930 में विजय सिंह पथिक से राजनीति में आने की प्रेरणा मिली। 1941 में आप कोटा प्रजामंडल के सदस्यों को लेकर महात्मा गांधी से मिलने वर्धा गए। 1942 में अगस्त क्रांति के दौरान महात्मा गांधी की गिरफ्तारी के बाद विरोध करने पर तीन माह तक नजरबंद कर दिया गया। दूसरी बार कोटा स्टेशन से गिरफ्तार कर आठ दिन जेल में डाल दिया।

16. लालचंद जैन : लालचंद जैन का जन्म 1918 जोधपुर में हुआ। बचपन से ही आप में स्वतंत्रता की भावना हिलोरे ले रही थी। 1942 के आंदोलन में आपने सक्रिय भाग लिया। जोधपुर में सिनेमा गृह (जिसमें अंग्रेज अफसर फिल्म देखने आने वाले थे) में बम रखने के कारण आपको गिरफ्तार कर लिया गया। किंतु शौचालय जाने के बहाने आप वेश बदल कर भाग निकले और कपूर चन्द नाम से इधर-उधर घूमते रहे। दिल्ली में रॉयल एयर फोर्स में भर्ती हो गए। किंतु यहाँ से भी कुर्ता पजामा पहन ठेकेदार का वेश बनाकर भाग निकले। आजादी मिलने तक भूमिगत रहकर कार्य करते रहे। आजादी के बाद दिए साक्षात्कार में आपने बताया कि

'हमें स्वराज्य प्राप्त करने के लिए हिंसक घटनाओं से परहेज नहीं था, हमारा उद्देश्य तो देश को आजाद कराना था, किसी को कष्ट देना नहीं।'

17. संपत लाल लूंकड : संपत लाल लूंकड का जन्म 1900 को फलौदी (जोधपुर) में हुआ। संपतलाल लूकड बचपन से ही अन्याय का विरोध करने लगे थे। 1939 में फलौदी में लोकपरिषद की स्थापना होने पर वे उसमें शामिल हो गए और अनेक वर्षों तक उसके अध्यक्ष रहे। जागीरदारों से निरंतर संघर्ष किया तथा मारवाड़ लोकपरिषद के जिम्मेवार हुकूमत आंदोलन में 26 अगस्त, 1942 को गिरफ्तार कर लिए गए और 16 माह जोधपुर जेल, बिजोलोई पैलेस आदि स्थानों पर नजरबंद रखे गए।

18. सूरजमल गंगवाल : सूरजमल गंगवाल का जन्म लाडनूं (राजस्थान) में हुआ, जो जोधपुर रियासत में आता था। गंगवाल ने 'मारवाड़ लोक परिषद' के तृतीय लाडनूं अधिवेशन में सक्रिय सहयोग दिया। 1942 में आंदोलन में जोधपुर में सत्याग्रह करने के अपराध में गिरफ्तार कर लिए गए तथा 1 वर्ष की सख्त कैद की सजा भोगी।

उपसंहार :

राजस्थान का मारवाड़ क्षेत्र भी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में कभी पीछे नहीं हटा। यहाँ के जैन धर्म के अनुयायी अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए अनेक कष्ट सहे। चाहे वह अंग्रेज हुकूमत के खिलाफ रहे या फिर स्थानीय जागीरदारी प्रथा के खिलाफ उन्होंने खुला विरोध किया और गुलामी और परतंत्रता से मुक्त करवाया। राजस्थान ही नहीं, भारत के स्वतंत्रता सेनानियों में इनका नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा गया है। ❑

संदर्भ :

- जैन डॉ. कपूरचंद, जैन डॉ. ज्योति- स्वतंत्रता संग्राम में जैन, प्रकाशक, प्राच्य श्रमण भारती, मुजफ्फनगर, संस्करण-प्रथम पृ. 24
- वही पृ.सं.- 53
- जैन संस्कृति और राजस्थान, पृ.- 344
- राजस्थान स्व. से., पृ.- 711
- रा. स्व. से. पृ.- 712
- रा. स्व. से. पृ.- 717
- रा. स्व. से. पृ.- 734
- जैन संस्कृति और राजस्थान, पृ.- 343
- इ. अ. ओ. भाग-2, पृ.-399
- इ. अ. ओ. भाग-2, पृ.-396
- रा. स्व. से. पृ.- 765
- स्वतंत्रता संग्राम में जैन, पृ. 295
- रा. स्व. से. पृ. 846
- वही पृ.-359
- स्वतंत्रता संग्राम में जैन,पृ. 849
- स्वतंत्रता संग्राम में जैन,पृ. 538
- लोक जीवन (साप्ताहिक) 14.08.2004)
- राज. स्व. से. पृ.-728
- राज. स्व. से. पृ.-50-68